सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

दिनांक- 28.02.2023
समय अपराह्ण - 2:00 बजे से
स्थान - योग साधना केन्द्र

उपस्थिति

1. प्रो0 हरेराम त्रिपाठी, कुलपति - **अध्यक्ष**
2. प्रो0 हीरककान्ति चक्रवर्ती
3. प्रो0 विजय कुमार पाण्डेय
4. प्रो0 राजनाथ
5. प्रो0 रमेश प्रसाद
6. डॉ0 दिव्यचेतन ब्रह्मचारी
7. प्रो0 सीमा सिंह (आनलाईन)
8. प्रो0 योगेशचन्द्र दुबे (आनलाईन)
9. डॉ0 अरूण कुमार राय
10. डॉ0 सत्येन्द्र कुमार यादव
11. श्री जनार्दन पाण्डेय, वित्ताधिकारी
12. कुलसचिव, सचिव

मंगलाचरण- डॉ0 दिव्यचेतन ब्रह्मचारी

सर्वप्रथम कुलपति महोदय ने मा0 कुलाधिपति महोदया द्वारा मनोनीत सदस्यों सहित समस्त सदस्यों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कार्यपरिषद् की कार्यवाही प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की।

कार्यक्रम संख्या-1- कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 15.12.2022 एवं 30.12.2022 की कार्यवाही की पुष्टि।

निर्णय - **विचार विमर्श के अनन्तर कार्यपरिषद् दिनांक 15.12.2022 एवं 30.12.2022 की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गयी।**

कार्यक्रम संख्या-2- कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 15.12.2022 एवं 30.12.2022 में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की सूचना।

निर्णय - **विचार विमर्श के अनन्तर कार्यपरिषद् दिनांक 15.12.2022 एवं 30.12.2022 में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की सम्पुष्टि की गयी।**

कार्यक्रम संख्या-3- दिनांक 09.01.2023 को सम्पन्न चयन समिति की संस्तुति पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष चयन समिति की कैरियर एडवान्समेण्ट योजनान्तर्गत असिस्टेण्ट प्रोफेसर से एसोसिएट प्रोफेसर प्रोन्नति हेतु गठित चयन समिति की बैठक दिनांक 09.01.2023 को कुलपति कैम्प कार्यालय में सम्पन्न हुई, जिसकी अधोलिखित संस्तुति विचारार्थ प्रस्तुत किया गया -

निर्णय- पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (Manuscript Conservation Centre) के लिए इन्दिरा गाँधी कला केन्द्र, नई दिल्ली के अन्तर्गत राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा (पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से वर्ष 2022 से 2024 तक द्विवर्षीय एम0ओ0यू0 हुआ है, जिसके अनुसार प्रतिवर्ष रू01200000/- (रूपये बारह लाख) विश्वविद्यालय को प्राप्त होगा। पाण्डुलिपियों के संरक्षण का कार्य एन0एम0एम0 के नियमानुसार कराया जायेगा। प्रथम त्रैमासिक धनराशि रू0 400000/- प्राप्त हो चुकी है। कार्यपरिषद् इस पर अपनी संस्तुति प्रदान की।

कार्यक्रम संख्या-13- योग विज्ञान केन्द्र विभाग के गठन पर विचार।

निर्णय- योग विज्ञान केन्द्र विभाग को सभी विभागों से पृथक गठित करने की स्वीकृति प्रदान की गयी।

कार्यक्रम संख्या-14- शास्त्री/आचार्य योग, स्नातकोत्तर योग डिप्लोमा योग विज्ञान विभाग हेतु केन्द्र सरकार शिक्षा विभाग से पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पद सृजन पर विचार।

निर्णय- शास्त्री/आचार्य योग, स्नातकोत्तर योग डिप्लोमा योग विज्ञान केन्द्र के अन्तर्गत संचालित करते हुए नैक को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्र सरकार शिक्षा विभाग/उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन से पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पद सृजन एवं अन्य कार्यक्रम के लिए परियोजना बनाकर प्रेषित करने की संस्तुति प्रदान की गयी।

कार्यक्रम संख्या-15- हिन्दू स्नातकोत्तर अध्ययन पाठ्यक्रम के लिए शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार से पद सृजन पर विचार।

निर्णय- हिन्दू स्नातकोत्तर अध्ययन पाठ्यक्रम के लिए शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार से पद सृजन के लिए पंचवर्षीय परियोजना को बना करके प्रेषित करने की संस्तुति प्रदान की गयी।

कार्यक्रम संख्या-16- उत्तर प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय से "रामायण पीठ" की स्थापना की स्वीकृति पर विचार।

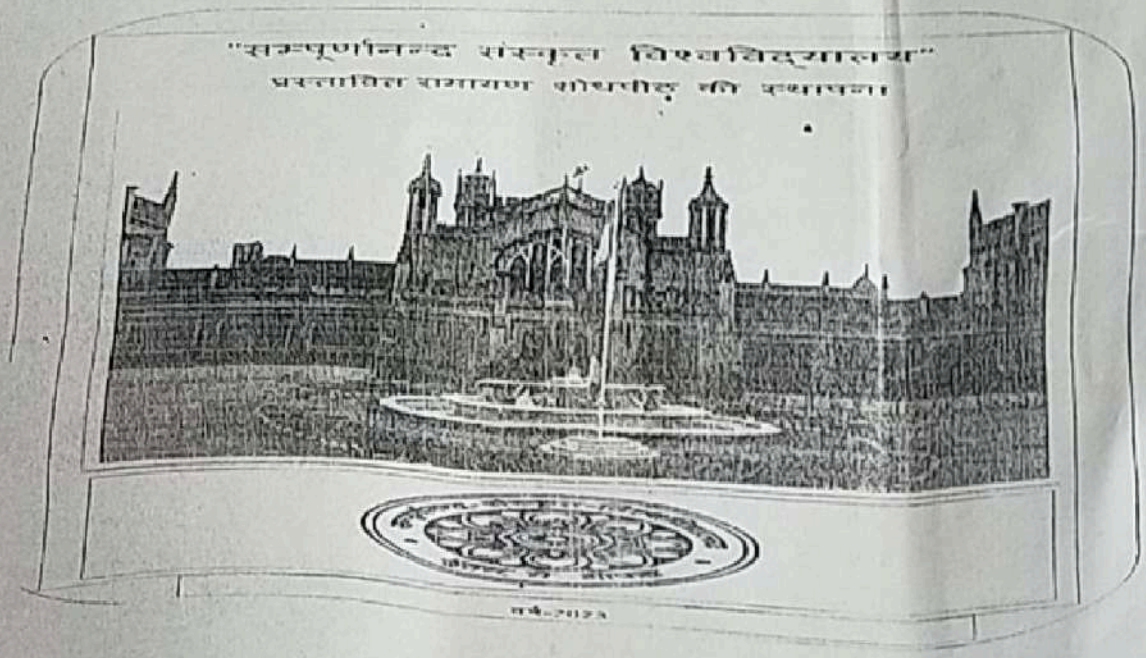

"सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय"

रामायण शोधपीठ की स्थापना

उद्देश्य

रामायण शोधपीठ की स्थापना करने का उद्देश्य है कि श्री राम के आदर्शों को आम जनमानस तक पहुंचाने के कार्य किये जाये साथ ही शोधपरक कार्य करते हुए यथातथ्य तथ्यों को शोध के माध्यम से प्रकाशित किया जाए, जिससे कि समाज तथा साहित्य या अन्यत्र कहीं भी रामायण के विषय में या रामायण के निहित बिन्दुओं के विषय में जो अवधारणाएं अथवा मान्यताएं प्रचलित हैं उनका सही विवरण शोधों के माध्यम से उद्घाटित हो सके। शोधपीठ की स्थापना होने के पश्चात् मुख्यरूप से जो कार्य होने है वह है कि रामायण के तथ्यों का गहन अन्वेषण तथा प्रकाशन एवं प्रस्तुतीकरण सटीकता के साथ किया जा सके जिससे रामायण के तथ्यों से अवगत हुआ जा सके।

इसके अतिरिक्त किञ्चित् उद्देश्य यह भी हो सकते हैं

-शिक्षा को संस्कार युक्त बनाने में रामायण की उपादेयता

-राष्ट्र के प्रति प्रत्येक की कर्तव्यनिष्ठा चिंतन में रामायण की उपादेयता

-राजधर्म में रामायण की प्रासंगिकता

- अर्थव्यवस्था पर रामायण का प्रभाव

-रामायण के आधार पर लोकोपकारी, राष्ट्र उन्नति में सहायक तथा विश्वव्यापी अनेकानेक भीषण समस्याओं का समाधान

दृष्टि और लक्ष्य

रामायण शोधपीठ की दृष्टि और लक्ष्य होगा कि रामायण में निहित जो विचार हैं उन विचारों को सहेजते हुए प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुतीकरण किया जाए जिससे कि रामायण के विषय में जो दृष्टि बने वह सही रूप से रामायण को जानने का प्रयास हो साथ ही रामायण के जो भी प्रसंग इत्यादि हैं उनके

विषय में सही तथा सटीकता के साथ छात्रों, विद्वानों तथा शोधकर्त्ताओं एवं आम जनमानस अभिगमन करवाने तथा ज्ञात तथा अज्ञात तथ्यों का शोधपरक प्रस्तुतिकरण हो सके।

आधारभूत संरचना

शोधपीठ को अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियों के लिए बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता होगी अतएव सुचारू संचालन और सुसंगत उत्पादन के लिए धन, फर्नीचर, जनशक्ति, भवन और अनुसंधान कर्मचारियों की व्यवस्था, रामायण शोधपीठ प्रकाशन विभाग, रामायण शोधपीठ प्रयोगशाला, रामायण शोधपीठ प्रशिक्षण केन्द्र आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। एतदर्थ इन सभी के लिए बुनियादी ढांचा विकसित करने, उपकरण खरीदने आदि के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से सहायता ली जा सकती है, साथ ही अन्य किसी भी स्रोतों के माध्यम से भी यदि कोई सहायता मिलती है तो उसको भी प्राप्त किया जा सकता है।

शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियाँ

1-अनुसंधान गतिविधियाँ

शोधपीठ भारतीय ज्ञान परम्परा स्थापित करने का कार्य करेगी जिससे कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान निरन्तर नित नये-नये प्रतिमान स्थापित कर ऊंचाईयों की ओर अग्रसर हो। शोधपीठ के द्वारा शैक्षणिक और अनुसंधान की गतिविधियों में मुख्यतया संबंधित क्षेत्रों के प्रख्यात विद्वानों, शोधार्थियों या व्यक्तियों को आमंत्रित करके संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों का आयोजन और संचालन करके सक्रिय रूप से अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियों की जायेगी, क्योंकि रामायण के अनुसंधान के परिणाम नीतिगत दिशा-निर्देशों को आकार देने में सहायक हो सकते हैं।

2-शैक्षणिक

शोधपीठ आने वाले दिनों में नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के

अनुरूपों को ध्यान में रखकर शोधपीठ में रामायण का गहन, चिन्तन, मनन करने वाले विद्वानों को अनुसंधान हेतु नियमानुसार विद्वानों को शामिल कर सकता है या नियुक्त करने हेतु स्वतंत्र होगी, साथ ही शोधपीठ की स्थापना होने पर सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त कर या स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों का संचालन अथवा पठन-पाठन करवाया जायेगा ।

प्रासंगिकता

रामायण शोधपीठ की स्थापना की प्रासंगिकता भगवान श्री राम के आदर्शों को जनसामान्य तक पहुचाना और साथ ही विद्वत समाज अपने अनुसंधानों के प्रमाणीकरण के माध्यम से नित नये नये शोध कार्य करके समाज में व्याप्त रामायण के प्रति जो भ्रांतियां प्रचलित हैं उनका समूल निराकरण कर तथ्यों को उजागर करने का प्रयास करना होगा क्योंकि रामायण में आख्यान, उपाख्यान प्रसंग इत्यादि वर्णित किए गए हैं वे प्रसंग या आख्यान उपाख्यान इत्यादि समाज को आईना दिखाने का कार्य करते हैं इसलिए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि रामायण के सिद्धांतों, आख्यानों उपाख्यानों या प्रसंग इत्यादि से प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त राजनीतिक, आर्थिक, आदर्शात्मक मानवीय मूल्यों को ज्ञात या, अज्ञात के माध्यम से ज्ञात किया जाए और उनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर शोध कार्य किये जाए क्योंकि जो शोध कार्य रामायण पर किये जायेंगे वे आवश्यकरूपेण समाज के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। रामायण में ऐसे अनेकों प्रसंग हैं जिन प्रसंगों के माध्यम से हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं, लेकिन उनको धरातल पर लाने के लिए रामायण के तथ्यपरक शोध कार्यों की नितांत आवश्यकता है क्योंकि जो तथ्यात्मक शोधपरक कार्य होंगे वह समाज के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो सकते हैं इसलिए रामायण शोधपीठ की नितांत उपयोगिता प्रतीत होती है, और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय क्योंकि प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन, अध्यापन का वर्तमान समय में प्रमुख केंद्र है यदि यहां रामायण शोधपीठ की स्थापना हो तो अवश्यमेव विश्वविद्यालय के लिए तथा रामायण पर होने वाले शोध परक अनुसंधानों को अवश्यमेव एक नई गति प्रदान होगी, जिससे कि रामायण के अनेक तथ्यों को उद्घाटित किया जा सकेगा। रामायण की प्रासंगिकता इससे भी

परिलक्षित होती है कि महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण को आधार मानकर भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में अनेकानेक ग्रंथों का विभिन्न भाषाओं प्रणनयन किया गया है-

भारतीय भाषाओं में मुख्यरूप से रामायण को आधार बनाकर जो प्रचलित ग्रन्थ प्राप्त होते हैं यथा-

1-हिन्दी में लगभग-11
2-बांग्ला में लगभग-25
3-तमिल में लगभग-12
4-तेलगु में लगभग-12
5-मराठी में लगभग-8
6-उड़िया में लगभग-6

इसके अतिरिक्त भारतीय भाषाओं में गुजराती असमिया मलयालम कन्नड़ इत्यादि विभिन्न भाषाओं में रामायण को आधार बनाकर बहुत से ग्रंथों की रचना अनेकानेक खंड काल में होती रही है

विदेशों में भी रामायण बहुत प्रचार प्रसार हुआ तथा रामायण को आधार बनाकर अनेकों प्रसिद्ध रचनाएं विदेशी भाषाओं में भी लिखी गई हैं जैसे कि विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानी रामायण, इंडोनेशिया की ककबिनरामायण, जावा का सेरतराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानीरामकथा, इण्डोचायनाकी रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैररामायण, बर्मा (म्यांम्मार) की यूतो की रामयागान, थाईलैंड की रामकियेन आदि रामचरित्र का बखूबी बखान करती है।

कार्ययोजना

शोधपीठ द्वारा किए जाने वाले सभी अनुसंधानों और शैक्षणिक गतिविधियों को दस्तावेज के रूप में सहेजने और प्रकाशित करने की योजना होगी। शोधपीठ के माध्यम से व्याख्यान, लिप्यंतरण द्वारा वार्ता, विद्वानों के मोनोग्राफ, शोध लेख, कामकाजी कागजात प्रकाशित किये जायेंगे और साथ ही ई-पुस्तकों और मुद्रित पुस्तकों के रूप में रामायण पर किये गये योगदानों का चयन कर भी प्रकाशित करने का कार्य शोधपीठ करेगी। इसके अतिरिक्त समय-समय पर निबंध और पोस्टर प्रतियोगिताओं आदि का भी आयोजन शोधपीठ करेगी।शोधपीठ में

होने वाले अनुसंधान का परिणाम [illegible] आधार होने से रामायण [illegible] हो सकते हैं, उनको रामायण के [illegible] प्रकाशनों, वाल्मीकि आदि [illegible] रामायण शोध पीठ [illegible] सम्पूर्णानन्द संस्कृत [illegible] आवश्यक होगी।
विश्वविद्यालय के कुलपति की स्वीकृति [illegible]

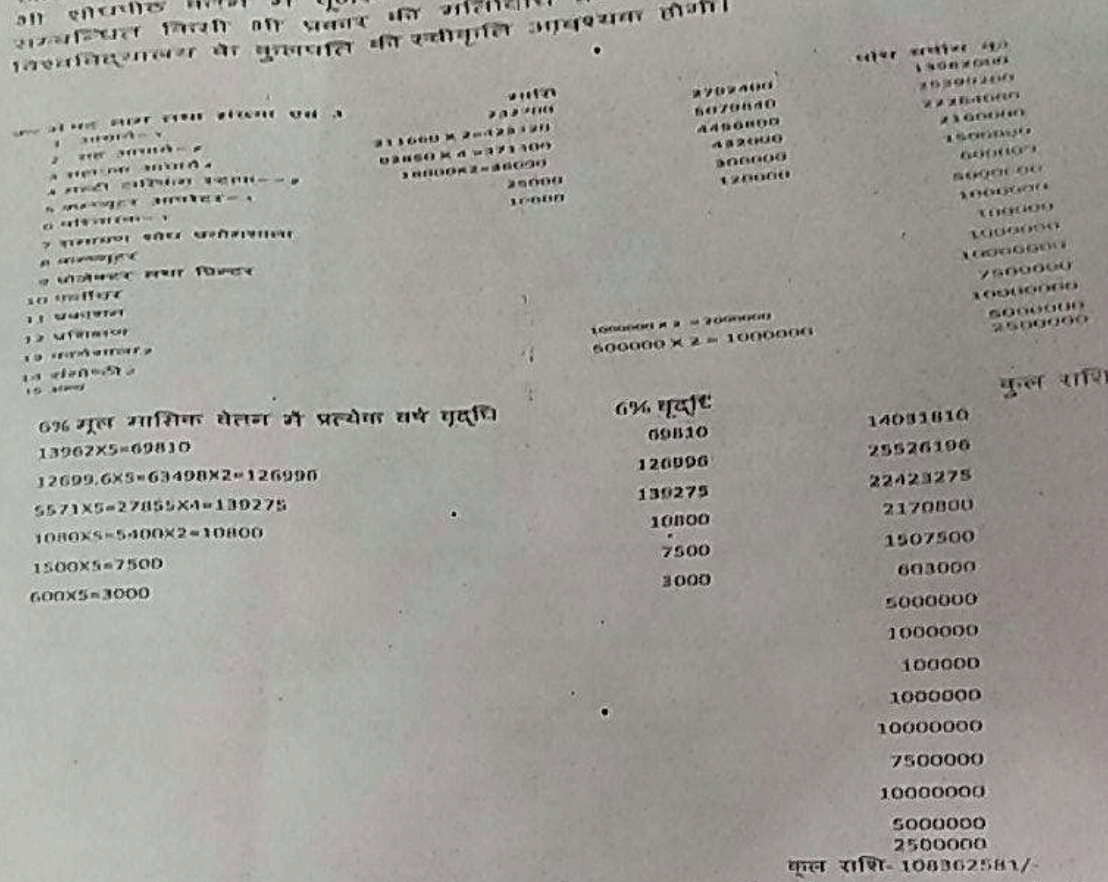

क्र0 सं0 पद नाम तथा संख्या			योग वार्षिक व्यय
1 प्रोफेसर-1	232700	2792400	13962000
2 सह आचार्य-2	211600 × 2=423200	5078840	25396200
3 सहायक आचार्य-4	92850 × 4 =371400	4456800	22284000
4 एम0टी0एस0-2	18000×2=36000	432000	2160000
5 कम्प्यूटर आपरेटर-1	25000	300000	1500000
6 परिचारक-1	10000	120000	600000
7 रामायण शोध प्रयोगशाला			5000000
8 कम्प्यूटर			1000000
9 प्रोजेक्टर तथा प्रिन्टर			100000
10 फर्नीचर			1000000
11 प्रकाशन			10000000
12 प्रशिक्षण			7500000
13 कार्यशाला 2		1000000 × 2 = 2000000	10000000
14 संगोष्ठी 2		500000 × 2 = 1000000	5000000
15 अन्य			2500000

6% मूल मासिक वेतन में प्रत्येक वर्ष वृद्धि	6% वृद्धि	कुल राशि
13962X5=69810	69810	14031810
12699.6X5=63498X2=126996	126996	25526196
5571X5=27855X4=139275	139275	22423275
1080X5=5400X2=10800	10800	2170800
1500X5=7500	7500	1507500
600X5=3000	3000	603000
		5000000
		1000000
		100000
		1000000
		10000000
		7500000
		10000000
		5000000
		2500000

कुल राशि- 108362581/-

निर्णय- उत्तर प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय को "रामायण शोध पीठ" की स्थापना के लिए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा प्रस्तावित 01 प्रोफेसर, 02 एसोसिएट प्रोफेसर, 04 असिस्टेण्ट प्रोफेसर, 02 एम0टी0एस, 01 कम्प्यूटर आपरेटर, 01 परिचारक, रामायण शोध प्रयोगशाला, कम्प्यूटर प्रोजेक्टर, प्रिंटर, फर्नीचर, प्रकाशन, प्रशिक्षण, कार्यशाला 02, संगोष्ठी 02 अन्य हेतु प्रस्ताव प्रेषित करने पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

कार्यक्रम संख्या-17- विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में प्राचार्य पद पर अध्यापन अनुभव पर विचार।

निर्णय- कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 15.12.2022 में प्राचार्य पद पर अध्यापन अनुभव हेतु पूर्व विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाँच वर्ष का अध्यापन अनुभव का तात्पर्य 5 वर्ष नियमित अध्यापन सेवा अथवा 5 वर्ष अध्यापन कार्य का प्रबन्ध समिति से सम्बन्धित व्यक्ति के खाते में धनराशि का स्थानान्तरण होने पर ही प्राचार्य पद हेतु 5 वर्ष का अध्यापनानुभव मान्य होगा। इस पर कार्यपरिषद् ने सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की।

कार्यक्रम संख्या-18- संस्कृत महाविद्यालयों की नियुक्ति अनुमोदन पर विचार।

निर्णय- कार्यक्रम संख्या-6(ग) के निर्णय की सम्पुष्टि की गयी।

कार्यक्रम संख्या-19- विश्वविद्यालय द्वारा नैक के लिए उपयोगी संगोष्ठी एवं परियोजना प्रत्येक संकाय को देने पर विचार।

निर्णय- वित्त अधिकारी ने अवगत कराया कि वर्ष 2023-24 के बजट में राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं शोध परियोजना प्रत्येक संकाय को देने के लिए बजट में मद का प्रावधान किया गया है। कार्यपरिषद् ने सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की।

कार्यक्रम संख्या-20- विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर विभिन्न आयोजनों पर विचार।

निर्णय- दिनांक 14 मार्च, 2023 से एक मास तक स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय कविसम्मेलन, अष्टावधानी, राष्ट्रीय नाटक मंचन, अखिल भारतीय संगोष्ठी, कार्यशाला, शास्त्रार्थ, वेदसम्मेलन आदि आयोजन की सम्पुष्टि की गयी

कार्यक्रम संख्या-21- आई.के.एस. सेण्टर द्वारा अखिल भारतीय शास्त्रार्थ सभा पर विचार।

निर्णय- आई0के0एस0 सेण्टर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शास्त्रार्थ सभा एन0सी0टी0ई0 आई0के0एस0 सेण्टर के स्कीम द्वारा रू0 400000/- धनराशि की स्वीकृति प्राप्त होने पर अन्तर्राष्ट्रीय शास्त्रार्थ सभा करने की संस्तुति प्रदान की गयी।

कार्यक्रम संख्या-22- आई.के.एस. सेण्टर द्वारा अखिल भारतीय वेद सम्मेलन पर विचार।

निर्णय- आई0के0एस0 सेण्टर द्वारा अखिल भारतीय वेद सम्मेलन एन0सी0टी0ई0 आई0के0एस0 सेण्टर रू0 400000/- धनराशि स्वीकृत होने पर कार्यक्रम आयोजन की स्वीकृति प्रदान की।

कार्यक्रम संख्या-23- उत्तर-प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु कंजर्वेशन सेण्टर पर विचार।

कुलपति द्वारा पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री को प्रेषित पत्र एवं संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान की परियोजना अधोलिखित है-